इकाई-III

10. फ़सलों के त्यौहार

सोचिए-बोलिए

प्रश्नः

1. चित्र में क्या-क्या दिखायी दे रहा है?
2. चित्र किस त्यौहार से संबंधित है?
3. कुछ त्यौहारों के नाम बताइए?

छात्रों के लिए सूचनाएँः

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. यह पाठ पढ़िए। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT NEW

सारा दिन बोरसी के आगे बैठकर हाथ तापते हुए गुज़र जाता है । कहाँ तो खिचड़ी के समय धूप में गरमाहट की शुरूआत होनी चाहिए और यहाँ हम सूरज के इंतजार में आस लगाए बैठे हुए हैं। पूरे दस दिन हो गए सूरज लापता है। आज सुबह तो रजाई से निकलने की हिम्मत नहीं हो रही थी।

बाहर देखने से तो समय का अंदाज़ बिल्कुल नहीं हो रहा लेकिन घर में हो रही चहल-पहल अब पता चल रही है। रह-रहकर कानों में कभी चाँपाकल के चलने और पानी के गिरने की आवाज़ तो कभी किसी के हाँक लगाने की आवाज़ आ रही थी, ''जा भाग के देख केरा के पत्ता आइल की ना?''

''आज ई लोग के उठे के नईखे का? बोल जल्दी तैयार होखस।''

अब तो उठने में ही भलाई है।

नहा-धोकर हम एक कमरे में इकट्ठा हुए। दादा और चाचा ने क्या सफ़ेद चकाचक माँड़ लगी धोती और कुर्ता पहना हुआ है! ''खिचड़ी में अइसन ठाड़ हम पहिले कब्बो ना देख नी सारा देह कनकना दे ता! '' पापा ने कहा। शायद आज धोती में उन्हें ठंड कुछ ज़्यादा लग रही है।

सामने मचिया पर खादी की सफ़ेद साड़ी पहने हुए दादी बैठी थीं। आज दादी ने अपने बाल धोए हैं- झक-झक सफ़ेद सेमल की रुई जैसे हल्के -फुल्के बाल। गौर से देखने पर भी एक काला बाल नज़र नहीं आता। बिल्कुल धुली-धुली सी लग रही हैं दादी। उनके सामने केले के कुछ पत्ते कतार में रखे हैं जिस पर तिल, मिट्ठा (गुड़), चावल आदि के छोटे-छोटे ढेर पड़े हुए हैं। हमें बारी-बारी से उन सभी चीज़ों को छूने और प्रणाम करने के लिए कहा गया। जब सबने ऐसा कर लिया तो उन सभी चीज़ों को एक जगह इकट्ठा करके दान दे दिया गया।

आज तो अप्पी दिदिया बुरी फँसी। उन्हें न तो चूड़ा-दही ही पसंद है और न ही खिचड़ी, पर आज तो फ़रमाइशी नाश्ता नहीं चलेगा। उन्हें दोनों ही चीज़ें खानी पड़ेगी ....आज खिचड़ी जो है। खिचड़ी खाने के बाद सभी ने 'गया' से आए तिल के लड्डू , गुड़ और चीनी के तिलकुट को बड़े चाव से खाया। खाते-खाते मैं सोच रही थी कि कितनी अलग है न यह खिचड़ी जो अभी हम मना रहे हैं। स्कूल में हम जो खिचड़ी मनाते थे उसकी अलग ही मस्ती हुआ करती थी। छुट्टी का दिन, नाव में बैठकर गंगा नदी की सैर और फिर टापू पर बालू में दौड़ते हुए पतंग उड़ाना या उड़ाने की कोशिश करना। कितना मज़ा आता था। इधर, हम पतंग उड़ाते थे और वहीं थोड़ी दूर पर गुरुजी,

विमला दिदूदा, आनंद जी, झिलमिट भैया सब मिलकर ईंट से बने चूल्हे पर बड़े-बड़े कड़ाहों में खिचड़ी बनाते थे। हम भी बीच-बीच में अपनी पतंग को सुस्ताने का मौका देते हुए मटर और प्याज छीलने बैठ जाते। वैसी खिचड़ी फिर दुबारा खाने को नहीं मिली। वाकई, ढंग कैसा भी हो, पर है ये खुशियों का त्यौहार !

जनवरी माह के मध्य में भारत में लगभग सभी प्रांतों में फ़सलों से जुड़ा कोई-न-कोई त्यौहार मनाया जाता है। कोई फ़सलों के तैयार हो जाने पर खुशी बाँटता है तो कुछ लोग इस उम्मीद में खुश होते हैं कि अब पाला कम होगा, सूरज की गर्मी बढ़ने से खेतों में खड़ी फ़सल तेज़ी से बढ़ेगी। सभी प्रांतों और इलाकों का अपना रंग और ढंग नज़र आता है। इस दिन सब लोग अच्छी पैदावार की उम्मीद और फ़सलों के घर में आने की खुशी का इज़हार करते हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश में मकर-संक्रांति या तिल संक्रात, असम में बीहू, केरल में ओणम, तमिलनाडु में पोंगल, पंजाब में लोहड़ी, झारखंड में सरहुल, गुजरात में पतंग और आंध्र प्रदेश में संक्रांति का पर्व सभी खेती और फ़सलों से जुड़े त्यौहार हैं। इन्हें जनवरी से मध्य अप्रैल तक अलग-अलग समय मनाया जाता है।

झारखंड में सरहुल जोशो-खरोश के साथ मनाया जाता है। चार दिनों तक इसका जश्न चलता रहता है।

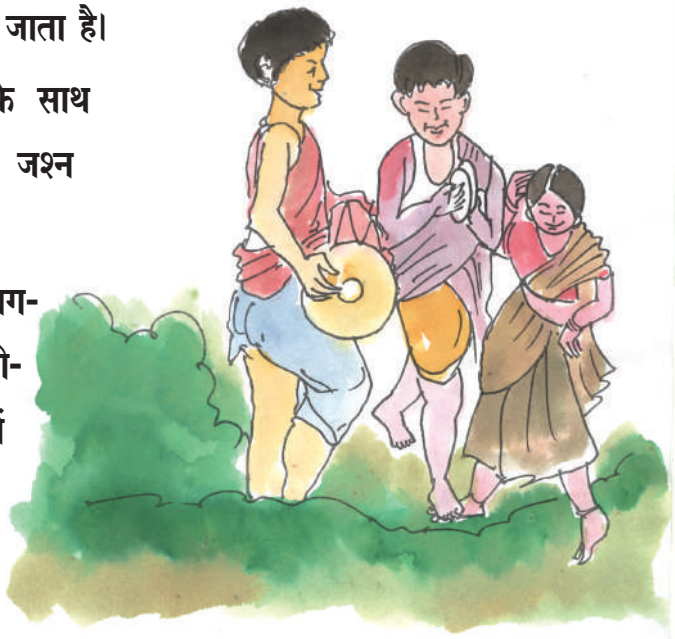

अलग-अलग जनजातियाँ इसे अलग-अलग समय में मनाती हैं। संथाल लोग फरवरी-मार्च में, तो औरांव लोग इसे मार्च-अप्रैल में मनाते हैं। आदिवासी आमतौर पर प्रकृति की पूजा करते हैं। सरहुल के दिन विशेष रूप से 'साल' के पेड़ की पूजा की जाती

SCERT TELANGANA

है। यही समय है जब साल के पेड़ों में फूल आने लगते हैं और मौसम बहुत ही खुशनुमा हो जाता है। स्त्री-पुरूष दोनों ही ढोल-मंजीरे लेकर रात भर नाचते-गाते हैं। चारों ओर फैली हुई छोटी-छोटी घाटियाँ, लंबे-लंबे साल के वृक्षों का जंगल और वहीं आस-पास बसे छोटे-छोटे गाँव। लिपे-पुते, करीने से बुहारे और सजाए गए अपने घरों के सामने लोग एक पंक्ति में कमर में बाँहे डालकर नृत्य करते हैं। अगले दिन वे नृत्य करते हुए घर-घर जाते हैं और फूलों के पौधे लगाते हैं। घर-घर से चंदा माँगने की भी प्रथा है। पर चंदे में मालूम है क्या माँगते हैं? मुर्गा, चावल और मिश्री। फिर चलता है खाने-पीने का दौर। तीसरे दिन जाकर पूजा होती है जिसके बाद लोग अपने कानों में सरई का फूल पहनते हैं।

इसी दिन बसंत ऋतु की शुरुआत मानी जाती है। धान की भी पूजा होती है। पूजा किया हुआ आशीर्वादी धान अगली फ़सल में बोया जाता है।

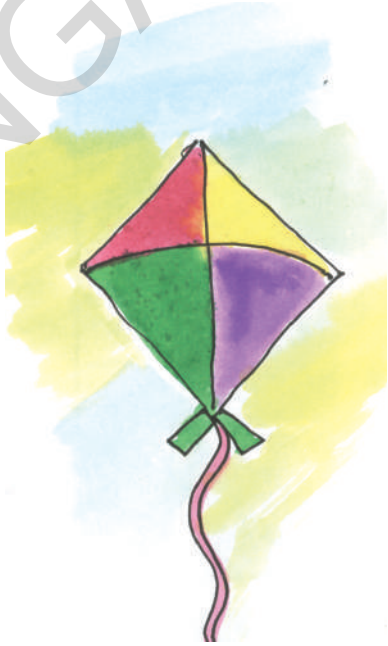

तमिलनाडु में मकर संक्रांति या फ़सलों से जुड़ा त्यौहार 'पोंगल' के रूप में मनाया जाता है। इस दिन खरीफ़ की फ़सलें चावल, अरहर, मसूर आदि कटकर घरों में पहुँचती हैं और लोग नए धान कूटकर चावल निकालते हैं। हर घर में मिट्टी का नया मटका लाया जाता है जिसमें नए चावल, दूध और गुड़ डालकर उसे पकाने के लिए धूप में रख देते हैं। हल्दी शुभ मानी जाती है इसलिए साबुत हल्दी को मटके से मुँह के चारों ओर बाँध देते हैं। यह मटका दिन में साढ़े दस-बारह बजे तक धूप में रखा जाता है। जैसे ही दूध में उफान आता है और दूध-चावल मटके से बाहर गिरने लगता है तो ''पोंगला-पोंगल, पोंगला-पोंगल'' (खिचड़ी में उफान आ गया) के स्वर सुनाई देते हैं।

दूसरी ओर, गुजरात में पतंगों के बिना तो मकर-संक्रांति का जश्न अधूरा ही माना जाएगा। इस दिन आसमान की ओर यदि नज़र उठाएँ तो शायद हर आकार और रंग-रूप की पतंगें आकाश में लहराती हुई मिलें। प्रत्येक गुजराती चाहे वह किसी भी धर्म,जाति या आयु का हो, पतंग उड़ाता है। हज़ारों-लाखों पतंगों से सूर्य भी ढँक-सा जाता है।

SCERT TELANGANA

कुमाऊँ में मकर संक्रांति को घुघुतिया भी कहते हैं। इस दिन आटे और गुड़ को गूँधकर पकवान बनाए जाते हैं। इन पकवानों को तरह-तरह के आकार दिए जाते हैं जैसे-डमरू, तलवार, दाड़िम का फूल आदि। पकवान को तलने के बाद एक माला में पिरोया जाता है। माला के बीच में संतरा और गन्ने की गंडेरी पिरोई जाती है। यह काम बच्चे बहुत रुचि और उत्साह के साथ करते हैं। सुबह बच्चों को माला दी जाती है। बहुत ठंड के कारण पक्षी पहाड़ों से चले जाते हैं। उन्हें बुलाने के लिए बच्चे इस माला से पकवान तोड़-तोड़कर पक्षियों को खिलाते हैं और गीत गाते हैं-

कौआ आओ
घुघूत आओ
ले कौआ बड़ौ
म कै दे जा सोने का घड़ौ
खा लै पूरी
म कै दे जा सोने की छुरी

इसके साथ ही जिस चीज़ की कामना हो, वह माँगते हैं।

है न कितने अलग-अलग अंदाज़ मकर संक्रांति को मनाने के। कहीं दूध, चावल और गुड़ की खीर बनती है तो कोई पाँच प्रकार के नए अनाज की खिचड़ी बनाता है। कहीं-कहीं लोगों का सैलाब नदी में स्नान के लिए उमड़ पड़ता है। लोग ठंड से ठिठुरते रहेंगे पर बर्फ़ीले पानी में कम-से-कम एक डुबकी तो ज़रूर लगाएँगे। हाल यह होता है कि इन जगहों पर तिल रखने की भी जगह नहीं होती। तिल से याद आया मकर संक्रांति के दिन पानी में तिल डालकर स्नान करना, तिल दान करना, आग में तिल डालना, तिल के पकवान बनाना विशेष महत्व रखता है। तुम्हारे घर या इलाके में इस त्यौहार को कैसे मनाया जाता है? इसे खिचड़ी, पोंगल, मकर-संक्रांति या कुछ और कहा जाता है? या तुम फ़सलों से जुड़े कोई और त्यौहार मनाती हो? यदि तुम आपस में बात करो तो तुम्हें यह जानकर हैरानी होगी कि कई बार एक ही इलाके में रहने वाले लोग भी इस त्यौहार को अलग-अलग ढंग से मनाते हैं।

SCERT TELANGANA

सुनिए-बोलिए

1. फ़सलों से जुड़ा त्यौहार सारे भारत में मनाया जाता है। तेलंगाणा में भी इसे मनाते हैं। तो हमारे राज्य में इसे क्या कहते हैं और इसे कैसे मनाते हैं? बताइए।
2. गुजरात में पतंगों के बिना मकर संक्रांति का जश्न अधूरा ही माना जाता है। आप भी संक्रांति के दिन पतंग उड़ाते होंगे। पतंग उड़ाने के आपके अनुभवों में से किसी एक अनुभव को बताइए।
3. पाठ में लेखक ने कहा है कि- बाहर देखने से समय का अंदाज नहीं हो रहा था। ऐसा क्यों हुआ होगा? जिनके पास घड़ी नहीं होती वे समय का अनुमान किस तरह से लगाते होंगे? बताइए।

पढ़िए

I. पाठ में अनेक प्रदेशों के नाम आये हैं । उन्हें रेखांकित कीजिए और लिखिए।

II. पाठ पढ़िए और वाक्यों की पूर्ति कीजिए ।

1. नहा-धोकर हम सभी एक कमरे में .....।
2. चार दिनों तक इसका .....।
3. इसी दिन से बसंत ऋतु की .....।
4. कुमाऊँ में मकर संक्रांति को .....।
5. कहीं-कहीं लोगों का सैलाब नदी में.....।

III. नीचे दिये गये वाक्यों के अर्थों से मिलते-जुलते वाक्य पाठ में से चुनकर लिखिए।

1. मुझे सोने का घड़ा लाकर दो।
2. इतनी कड़ाके की ठंड हमने पहले कभी नहीं देखी।
3. आज इन लोगों को उठना नहीं है क्या?

IV. पाठ पढ़िए और निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. मकर संक्रांति का त्यौहार भारत के विभिन्न प्रांतों में किन-किन नामों से मनाया जाता है?
2. तिलकुट में क्या-क्या चीज़ें डाली जाती हैं?
3. आदिवासी लोग इस त्यौहार को कैसे मनाते हैं?

SCERT TELANGANA

लिखिए

1. पाठ में विशेषतः संक्रांति के त्यौहार का वर्णन है। संक्रांति के अलावा कौनसा त्यौहार है जो सारे देश में ऐसे ही मनाया जाता है?
2. पाठ में बताया गया है कि- ''पूरे दस दिन हो गये सूरज लापता है।'' क्या कभी ऐसा हो सकता है कि सूरज बिल्कुल ही न निकले? अगर ऐसा होगा तो क्या होगा?
3. लोग ठंड से ठिठुरते हैं फिर भी बर्फ़ीले पानी में डुबकी लगाते हैं? यदि उन्हें बर्फीले पानी के स्थान पर गरम पानी दे दिया जाय तो वे कैसा अनुभव करेंगे और क्यों?

शब्द भंडार

I. नीचे दिये गये वाक्यों में रेखांकित शब्दों के समानार्थी शब्द कोष्ठक से चुनकर लिखिए।

1. गुड़ और चीनी के तिलकुट को बड़े <u>चाव</u> से खाया।

(शौक/इच्छा)

2. उनके सामने केले के पत्ते <u>कतार</u> में रखे हैं।

(फ़र्श/पंक्ति)

3. कहीं-कहीं लोगों का <u>सैलाब</u> नदी में स्नान के लिए उमड़ पड़ता है।

(भीड़/आदमी)

II. तिल से तेल बनता है। और किन-किन चीज़ों से तेल बनता है। उनके नाम लिखिए।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

किसान और खेती हममें से बहुत से लोगों की जानी-पहचानी दुनिया का हिस्सा नहीं हैं। विशेष रूप से शहर के लोगों को यह अहसास नहीं है कि हमारी जिंदगी किस हद तक इनसे जुड़ी हुई है। देश के कई हिस्सों में आज किसानों को जिंदा रहने के लिए

SCERT TELANGANA

बहुत मेहनत और संघर्ष करना पड़ रहा है। अगर यह जानने की कोशिश करें कि हम दिन भर जो चीज़ें खाते हैं, वे कहाँ से आती हैं, तो किसानों की हमारी जिंदगी में भूमिका को हम समझ पायेंगे। किसानों की इस भूमिका का वर्णन करते हुए उन्हीं की वाणी में एक कहानी लिखिए। जिसका शीर्षक होगा 'मेरी कहानी'।

प्रशंसा

'गया' शहर तिलकुट के लिए प्रसिद्ध है। हमारे देश में छोटी-बड़ी ऐसी कई जगहें हैं, जो अपने खास पकवान के लिए मशहूर हैं। उन खास पकवानों के बारे में मालूम कीजिए और उनके विशेष स्वाद के बारे में लिखिए।

भाषा की बात

पिछले दो वर्षों से आपने 'काम वाले शब्दों' के बारे में जाना। इन शब्दों को क्रिया भी कहते हैं। क्योंकि क्रिया का संबंध कोई काम करने से है। नीचे पोंगल बनाने की विधि दी गई है। इसमें बीच-बीच में कुछ क्रियाएँ छूट गई हैं। उचित क्रियाओं का प्रयोग करते हुए इसे पूरा कीजिए।

1. भूनना **2.** मिलाना **3.** पकना **4.** परोसना

पोंगल (पाँच व्यक्तियों के लिए)

1. चावल	-	1 प्याला
2. मूँग दाल	-	1/2 प्याला
3. पानी	-	1 प्याला
4. गुड़ या शक्कर	-	2 प्याला
5. इलायची	-	पाँच
6. कालीमिर्च	-	पाँच दाने
7. घी	-	चार बड़े चम्मच

SCERT TELANGANA

विधि

एक बर्तन में एक चम्मच घी में मूँगदाल को सुनहरी भूरी होने तक.....लो। उसमें धुले हुए चावल डालो। उसमें एक प्याला पानी डालो। उसके बाद पाँच प्याले दूध को पलटे से ..... हुए डालो। दोनों के..... के बाद गुड़ या शक्कर उसमें मिलाओ। पलटे से मिलाते रहो। उसमें काली मिर्च डालो। तीन चम्मच घी को भी उसमें .....। अंत में इलायची को मिलाओ।..... गरमागरम या ठंडा।

परियोजना कार्य

विविधता हमारे देश की पहचान है। फ़सलों का त्यौहार हमारे देश के विविध रंग-रूपों का एक उदाहरण है। नीचे विविधता के कुछ और उदाहरण दिये गये हैं। पाँच-पाँच बच्चों का समूह एक-एक उदाहरण लें और उस पर जानकारी इकट्ठी करें। (जानकारी चित्र,फोटोग्राफ, कहानी,कविता, सूचनात्मक सामग्री के रूप में हो सकती है।) हर समूह को इस जानकारी को कक्षा में प्रस्तुत करना होगा ।

- भाषा
- कपड़े
- नया वर्ष
- भोजन
- लोक कला
- लोक संगीत

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ। 2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ। 3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ। 4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ। 5. पाठ के आधार पर त्यौहार के बारे में लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA